भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

माह : नवम्बर
बारहवां अंक

प्रकाशन वर्ष 2018
भाषा : हिन्दी

दिवाली

शुभ धनतेरस - शुभ दीपावली
भैया दूज - हित अम्ब्रीष जी
छठ पूजा - देव उठनी एकादशी
तुलसी विवाह - नवम्बर राशिफल

शुभ धनतेरस

धनतेरस शुभ मुहूर्त :–

5 नवंबर 2018 (सोमवार)
धनतेरस पूजा मुहूर्त : 18:05 से 20:01 तक
त्रयोदशी तिथि आरंभ : 01:24 बजे (5 नवंबर 2018)
त्रयोदशी तिथि समाप्त : 23:46 बजे (5 नवंबर 2018)

दिवाली से पूर्व धनतेरस का अत्यंत महत्व होता है, धनतेरस दिवाली से दो दिन पूर्व मनाई जाती है। धनतेरस को धन्वंतरि त्रयोदशी, यमदीप, धनवंतरी जयंती आदि के नामों से भी जाना जाता है। धनतेरस आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को पड़ती है, इस वर्ष यह 5 नवम्बर 2018 दिन सोमवार को मनाई जायगी।

धनतेरस का महत्वः–

अपने धन को तेरह गुना करने का दिन है धनतेरस। 'धन' का अर्थ है समृद्धि और 'तेरस' तेरहवें दिन को दिखाता है। इस प्रकार आश्विन मास के कृष्ण पक्ष के तेरहवें दिन को धनतेरस मनाई जाती है, इस दिन घर में नए बर्तन लाने की परंपरा है। मान्यता है की इस दिन कोई धातु जैसे– सोना, चांदी, पीतल आदि की कोई वस्तु या बर्तन लाने से लक्ष्मी जी वर्षभर घर में ही स्थापित रहतीं हैं। इस दिन घर की साफ–सफाई अच्छे से होनी चाहिए, घर पर पड़ी पुरानी और बेकार वस्तु को फेंक देना चाहिए। इस से घर में दरिद्रता नहीं रहती और लक्ष्मी जी सदैव साफ–सुथरे घर में ही प्रवेश करतीं हैं। धनतेरस के दिन यमराज की भी पूजा करने का विधान है, इस दिन दक्षिण दिशा (यम की दिशा) की ओर दिया जलाने से घर में किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती।

धनतेरस की पूजा विधि :–

माता लक्ष्मी जी की पूजा रात्रि के समय ही की जाती है, इसलिए सांय काल में स्नान आदि कर शुद्ध हो जाएँ और पूजाघर को भी स्वच्छ कर लें। इसके बाद माँ लक्ष्मी की प्रतिमा को अथवा श्री यंत्र को एक चौकी पर स्थापित करें और दीप प्रज्वलित करें। अब प्रतिमा अथवा श्री यंत्र पर रोली का तिलक लगाकर अक्षत चढ़ाएं और पुष्प अर्पित करें। इसके बाद माता की चालीसा, मन्त्र तथा चालीसा आदि का पाठ करें और माता लक्ष्मी का ध्यान करें। इस दिन माता को मिष्ठान का भोग भी अवश्य लगाएं, इस दिन सम्पूर्ण घर में प्रकाश

होना चाहिए। इसके लिए मिटटी के दीपक आप पूरे घर में लगा लीजिये, ये सबसे उत्तम उपाय है। इस दिन कई गाँव में मवेशियों की भी पूजा की जाती है, क्योकि वे उनकी आय का मुख्य स्रोत होते हैं।

धनतेरस की पौराणिक कथा :–

एक बार भगवान विष्णु पृथ्वी पर विचरण करने जा रहे थे, उन्हें देख लक्ष्मी जी का मन हुआ। उन्होंने विष्णु जी से उन्हे साथ में ले चलने का आग्रह किया। विष्णु जी मान गए और दोनों ही मृत्युलोक पहुंच गए। कुछ देर साथ में विचरण करने के बाद एक स्थान पर विष्णु जी ने लक्ष्मी जी से कहा की तुम यहीं पर प्रतीक्षा करो, मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूँ। तुम तब तक पीछे मत मुड़ना जब तक मैं आ न जाऊ। लक्ष्मी जी उनकी बात सुनकर वहीं रुक गयीं किन्तु उनके मन में कौतुक उत्पन्न हो गया की श्री हरी ने उन्हें साथ चलने से क्यों मना किया। इसलिए थोड़ी देर में वो भी उसी दिशा की ओर चली गयीं। मार्ग में उन्हें सरसों का सुन्दर खेत दिखा, जहाँ उन्होंने उन फूलों का श्रृंगार किया और फिर आगे बढ़ गयीं। आगे उन्हें गन्ने का खेत मिला, उन्होंने वहां गन्ने तोड़े और खाने लगीं। तभी विष्णु जी वहां आ गए और वे लक्ष्मी जी को वहां देखकर क्रोधित हो गए। उन्होंने कहा मैंने तुम्हे यहां आने के लिए मना किया था किन्तु तुम न मानीं और यहां किसान का नुकसान कर के उसका अपराध कर बैठी।

अब तुम इस पाप का पश्चाताप यहां 12 वर्ष तक किसान की सेवा में रहकर करो। यह कहकर श्री विष्णु लक्ष्मी जी को

छोड़कर क्षीर सागर चले गए। किसान बहुत गरीब था और लक्ष्मी जी वहीं उसकी सेवा में रहने लगीं। एक दिन लक्ष्मी जी ने किसान की पत्नी से कहा तुम गन्ने से बनाई हुई लक्ष्मी की पूजा करो इस से तुम्हारी गरीबी दूर हो जायगी। किसान की पत्नी ने ऐसा ही किया, उसने गन्ने की लक्ष्मी बनाई और उनकी पूजा की। इस पूजा के प्रभाव से किसान का घर धन–सम्पदा से भर गया और किसान के बारह वर्ष बड़े आराम से ऐश्वर्य में निकल गए। किन्तु 12 वर्ष पूर्ण होने के बाद विष्णु जी लक्ष्मी जी को लेने आ गए। किन्तु किसान ने उन्हें जाने नहीं दिया, वह जानता था की उनके घर में आने के बाद ही उसकी दशा सुधर गयी है इसलिए वह नहीं चाहता था की वे वहां से जाएँ। चूँकि लक्ष्मी जी अभी भी किसान की सेवा में थीं इसलिए वे बिना उसकी आज्ञा के नहीं जाना चाहती थीं।

विष्णु जी ने उस किसान को चार कौड़ियां दीं और कहा आज वारुणी पर्व है इसलिए तुम इन कौड़ियों को ले जाकर गंगा जी में डाल दो तो तुम्हारे घर पर कभी दरिद्रता नहीं होगी। और साथ में यह भी वचन दिया की उसके वापस आने तक वह लक्ष्मी जी को वहां से नहीं ले जायँगे। वह पत्नी के साथ भागता हुआ गंगा जी के पास गया और जैसे ही वह कौड़ियां नदी में डालने लगा उसमे से चार हाथ निकले और उन कौड़ियों को ले लिया। किसान ने पुछा आप कौन हैं ? तब देवी गंगा वहां प्रकट हुई और अपना परिचय दिया, फिर उन्होंने पुछा की उसे ये कौड़ियां कहाँ से मिली। तब किसान ने बताया की उसके घर पर एक स्त्री है उसके पति ने यह उसे दी थीं। माता गंगा ने बताया की वह स्वयं माँ लक्ष्मी और श्री हरी विष्णु हैं।

यह सुनकर किसान समझ गया की उसके घर में इतनी समृद्धि कैसे आई, अब वह घर पंहुचा तो उसने लक्ष्मी जी को भेजने से बिलकुल मना कर दिया। उसने कहा माता आप चली गयीं तो मेरे घर में फिर से दरिद्रता आ जायगी। यह सुनकर माता ने कहा, कल तेरस है तुम कल के दिन गन्ने की लक्ष्मी बनाना, मेरे निमित्त एक दीपक जलाना और एक कलश अक्षत से भर कर उसमे पैसे रखना। मै उस कलश में वास करुँगी। यह कहकर माता वहां से चली गयीं। किसान ने वैसा ही किया जैसा माता ने कहा, उसके बाद से उसके घर पर कभी भी धन की कमी नहीं हुई।

शुभ दीपावली

दिवाली मुहूर्त 2018 :–

7 नवंबर 2018 (बुधवार)
लक्ष्मी पूजा मुहूर्त : 17:57 से 19:53
अमावस्या तिथि आरंभ : 22:27 (06 नवंबर 2018)
अमावस्या तिथि समाप्त : 21:31 (07 नवंबर 2018)
तिथि : कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या

दीपावली हिन्दू त्योहारों में सबसे बड़ा त्यौहार माना जाता है, इस त्यौहार की लोग कई कई महीनों से तैयारियां शुरू कर देते हैं। यह एक ऐसा त्यौहार है जिसमे घर से दूर रह रहे लोग भी अपने घर इस त्यौहार को मनाने पहुंच जाते हैं। दीपावली कोई अकेला नहीं बल्कि पांच पर्वों का अनूठा त्यौहार है, जिसमे धनतेरस, नरक चतुर्थी, गोवर्धन पूजा, यम द्वितीया तथा दिवाली शामिल होते हैं। इस त्योहार के लिए पूरे घर की अच्छे से साफ–सफाई, रंगाई–पुताई तथा सजावट की जाती है।

दीपावली कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मनाई जाती है, जो इस वर्ष 7 नवंबर को पड़ेगी। दीपावली दीपों का त्यौहार है, इस दिन लोग अपने अपने घरों में दिए जलाते हैं तथा अमावस्या के अंधकार को दीपक के प्रकाश से दूर करते हैं। इस दिन रात्रि में देवी लक्ष्मी का पूजन होता है तथा साथ में बुद्धि के दाता गणपति का भी पूजन होता है।

दीपावली पर पूजा विधान :–

1. इस दिन घर के बड़े लोग व्रत रखते हैं, लक्ष्मी जी का पूजन रात्रि में किया जाता है इसलिए रात्रि के समय स्नान कर के पवित्र होकर पूजा घर में प्रवेश करना चाहिए। पूजा के लिए घर के सभी सदस्य मौजूद होने चाहिए।
2. सर्वप्रथम गणेश जी का विधि विधान से पूजन करें

तत्पश्चात माँ लक्ष्मी जी का पूजन करें। इस दिन कुबेर जी का पूजन करने का भी विधान है।

3. महालक्ष्मी जी की पूजा में रोली, अक्षत, चंदन, पुष्प, मिष्ठान, पान, सुपारी आदि शामिल कीजिये। पूजा के बाद सुपारी को अपनी तिजोरी अथवा पर्स में रख लीजिये, इस से धन–सम्पत्ति में वृद्धि होगी।
4. दिवाली पर्व धनतेरस से ही शुरू माना जाता है, इसलिए इसी दिन से मंदिर में अक्षत से भरा एक पात्र अथवा कलश मंदिर में स्थापित करें और इसे कुबेर जी और माता लक्ष्मी जी के सम्मुख रखें।
5. दीपावली पर सभी देवताओं की पूजा करने के बाद अंत में माता लक्ष्मी की घी के दीपक से आरती करें।

दिवाली पूजन के लिए आवश्यक सामाग्री :–

केसर, रोली, चावल, पान का पत्ता, सुपारी, फल, पुष्प, खील, बतासे, सिन्दूर, अक्षत, पंचमेवा, गंगाजल, नारियल आदि।

कैसे करें दीपावली पर पूजन की तैयारी :–

1. पूजाघर में या एक शुद्ध स्थान में एक चौकी पर लाल कपडा बिछा कर उसपर श्री यंत्र तथा नवग्रह यंत्र स्थापित करें। इसके साथ ही एक ताम्बे का कलश लीजिये और उस पर जल भरकर उस में गंगाजल, दूध, दही, शहद, लौंग और सिक्के डाल लीजिये और एक लाल कपडे से ढक कर नारियल कलावे में लपेट कर उस पर रख दें।
2. इसी चौकी पर लक्ष्मी जी तथा गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कीजिये, यदि प्रतिमा न हो तो कोई चित्र स्थापित कर लीजिये। लक्ष्मी जी के साथ साथ माता सरस्वती जी का पूजन भी इस दिन शुभ माना जाता है। इसलिए माँ सरस्वती को भी इस चौकी पर स्थापित कीजिये।
3. सभी देवो को दूध, दही तथा गंगाजल से स्नान करा कर अक्षत चंदन का तिलक लगाएं तथा फल–फूल अर्पित कीजिये। दाहिनी तरफ एक पंचमुखी दीपक अवश्य जलाएं जिसमे घी या तिल का तेल प्रयोग करें।
4. जो लोग व्यापार आदि के क्षेत्र में हों, इस दिन उन्हें अपने कार्यालयों अथवा दुकानों पर भी माता लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए।

भैया दूज

भारतीय हिन्दू धर्म में वर्ष में दो ऐसे पर्व हैं जो भाई और बहन के प्रेम को समर्पित हैं। एक है रक्षाबंधन और दूसरा है भाई दूज। भाई दूज कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला पर्व है जिसे यम द्वितीया भी कहा जाता है। यह दिवाली के दो दिन बाद आता है तथा इस दिन बहनें अपने भाई की खुशहाली की कामना करतीं हैं।

भैया दूज की कथा:–

भगवान सूर्य की पत्नी का नाम संज्ञा था, जिनसे उन्हें यमराज और यमुना नाम की संताने प्राप्त हुई थीं। यमुना अपने भ्राता यमराज से बहुत स्नेह करतीं थीं। यमुना के विवाह के पश्चात् वे अपने भाई से मिल नहीं पाती थीं और यमराज स्वयं उनसे मिलने नहीं जाते थे, क्योकि यमराज का आना मृत्यु का सूचक बन चुका था इसलिए यमराज समझते थे की उनके जाने से कहीं उनकी बहन दुखी न हो जाये।

यमुना यमराज से निवेदन करती रहती थी की वे कभी उनके घर आएं और भोजन ग्रहण करें इसलिए एक दिन यमराज ने सोचा की उनकी बहन के विनम्र और प्रेम भरे निवेदन को ठुकराना सही नहीं है। एक दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यमराज अपनी बहन से मिलने पहुंच गए। चूँकि उस दिन वे अपनी बहन से मिलने जा रहे थे इस कारण वे बहुत अधिक प्रसन्न थे और इसलिए उन्होंने उस दिन नरक में

रहकर अपने कर्मों का भोग करने वाले जीवों को एक दिन के लिए मुक्त कर दिया था।

यमराज को अपने घर आया हुआ देखकर यमुना बहुत प्रसन्न हुई और उनका आदर सत्कार कर उन्हें तरह तरह का स्वादिष्ट भोजन कराया।

अपनी बहन की ऐसी भक्ति और प्रेम देखकर यमराज द्रवित हो गए और उन्होंने यमुना से पूछा की उसे क्या वरदान चाहिए। यमुना ने कुछ देर सोचा और कहा, आज कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया है इसलिए आप मुझे वचन दीजिये की प्रत्येक वर्ष इस दिन आप मुझसे मिलने आयंगे और जो कोई भी मनुष्य इस दिन आपका पूजन करेगा आप उसे दीर्घायु देंगे और उनके घर पर किसी की भी अकाल मृत्यु नहीं होगी। यमराज अपनी बहन की बात सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने अपनी बहन को उसकी इच्छा का वरदान दे दिया। इसी कारण भैया दूज के दिन सभी बहिने अपने भाई की पूजा करती हैं और उसकी दीर्घायु की कामना करतीं हैं और सभी भाई अपनी बहन को कुछ उपहार देते हैं। भाई दूज के दिन यमराज और यमुना का पूजन किया जाता है।

किस प्रकार मनाएं भाई दूज? :–

मान्यता और परंपरा के अनुसार किसी भी व्यक्ति को इस दिन अपने घर मुख्य भोजन नहीं करना चाहिए (यदि बहन साथ नहीं रहती तो), उन्हें अपनी बहन के घर पर ही उसके हाथों के बने पकवान खाने चाहिए। जितनी भी बहने हों या तो सभी अपने भाई के घर जाएँ या फिर भाई उन सभी के घर जाये। यदि सगी बहन नहीं है तो आप ममेरी, मौसेरी कोई भी बहन जो आपके रिश्ते में आती है उसके घर जाएँ और भोजन ग्रहण करके उन्हें उपहार दें। उपहार में वस्त्र या आभूषण उत्तम रहते हैं किन्तु यदि संभव न हो तो कुछ पैसे ही उपहार में दे दें। बहन को चाहिए की वो अपने भाई के पैर धुलाकर उसे आसान में बैठाएं उसके बाद तिलक आदि करके उसकी आरती उतारें और फिर अपने हाथ के बने व्यंजन जैसे– पूरी, दाल–भात, फुल्के, कढ़ी, सीरा, लड्डू, जलेबी आदि यथासंभव भोजन कराएं और फिर उसकी लम्बी उम्र की कामना करें। कई स्थानों में इस दिन भाई को चूड़ा (पोहा) पूजने की भी परंपरा है, इसमें बहने चूड़ा लेकर भगवान से अपने भाई के कुशल मंगल की कामना करती हैं और उन्हें अपने भाई के शीश पर रख देती हैं।

हित अम्ब्रीष जी आनंदोत्सव:

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम ''आनंदोत्सव'' में गुरु श्री हित अम्ब्रीश जी ने वहां आये भक्तों को सम्बोधित किया। यह उत्सव श्री कृष्ण जी के आगमन की बेला पर रखा गया था। आनंदोत्सव दिल्ली के पीतमपुरा में जगदम्बा पंडाल में आयोजित किया गया था तथा यह कार्यक्रम 29 अगस्त से 2 सितम्बर तक अर्थात 5 दिन चला।

श्री हित अम्ब्रीश जी ने कहा की श्री कृष्ण जी के जन्म का उत्सव केवल आप और हम नहीं मनाते बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि मनाती है, क्योकि इस समय प्रकृति हर्षित होती है, बीज अंकुरित होते हैं और ऋतू भी अपनी पूर्ण मस्ती में होती है। यह ऐसा समय होता है जो आनंद को भी आनंदित कर देता है। अम्ब्रीश जी ने सर्वप्रथम अपने आराध्य श्री राधा वल्लभ जी को प्रणाम कर श्री हित हरिवंश महाप्रभु जी तथा अपने गुरुजनों को याद किया और फिर अपने प्रवचन आरम्भ किये। हित अम्ब्रीश जी के मधुर स्वरों में भजनों तथा प्रवचनों ने भक्तों को सम्मोहित कर दिया, इसे गुरुदेव की आवाज का ही जादू कहेंगे जो भक्त अपने आप को अम्ब्रीश जी के साथ साथ गाने से रोक नहीं पाए और उनके साथ साथ सभी भजन पूरी मस्ती से गाये।

श्री हित अम्ब्रीश जी ने मीराबाई, कबीर दास और तुलसीदास जैसे महान भक्तों की भक्ति और विश्वास के सम्बन्ध में प्रवचन दिया। उन्होंने भक्तों से कहा की किसी भी

साधना के लिए साधन की आवश्यकता नहीं होती, सबसे जरूरी होता है मन जिसने एक बार निश्चय कर लिया कुछ करने का तो उसे कर के ही मानता है। उन्होंने कहानी और कथा में भेद भी बताया, उनके अनुसार कहानी सुला देती है किन्तु कथा मनुष्य को जगा देती है। संतों का साथ और उनकी वाणी सुनने का अवसर केवल भाग्य से ही मिलता है। गुरु देव ने कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में बधाई गीत भी गाये। पांच दिन तक चले इस उत्सव में भक्तों को गुरुदेव ने नयी नयी कथाओं की कृपा से सराबोर कर दिया। और अंतिम दिन बाल गोपाल का जन्मोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया, श्री कृष्ण की बाल प्रतिमा को झूले पर बैठा कर उनका पंचतत्व से अभिषेक किया गया तथा फूलों की वर्षा से उनकी आराधना की गयी। भक्तों को पंजीरी का प्रसाद भी बांटा गया और फिर भंडारे से एक विशाल जन समूह को भोजन कराया गया।

छठ पूजा

छठ पूजा मुहूर्त :–

13 नवंबर 2018 (मंगलवार)
छठ पूजा के दिन सूर्योदय : 06:51
छठ पूजा के दिन सूर्यास्त : 17:38
षष्ठी तिथि आरंभ : 01:50 (13 नवंबर 2018)
षष्ठी तिथि समाप्त : 04:22 (14 नवंबर 2018)

छठ पूजा माता छठी की पूजा हेतु मनाई जाती है, जो की वेदों के अनुसार भगवान सूर्यनारायण की पत्नी उषा हैं। इसलिए छठ पूजा के दिन माँ छठी के साथ साथ उनके पति सूर्य देव की भी पूजा का विशेष विधान होता है। छठ पूजा वर्ष में दो बार मनाई जाती है, चैत्री छठ पूजा चैत्र मास में आती है और कार्तिक छठ पूजा जो कार्तिक मास में षष्ठी तिथि को मनाई जाती है। यह व्रत अत्यंत कठिन है और इसमें पूर्ण तन और मन को साधना होता है इसलिए इसे हठयोग भी कहा जाता है।

छठ पूजा की विशेषता :–

छठ पूजा का पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। यह त्यौहार मूल रूप से बिहार, झारखण्ड, नेपाल तथा उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। यह पर्व चार दिनों तक चलता है, जो की दिवाली की अमावस्या के बाद मनाया जाता है। मुख्यतः भैया दूज के तीसरे दिन से यह व्रत शुरू होता है , तथा शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन मनाये जाने

के कारण इसका नाम छठ पूजा पड़ा। इस दिन व्रत रखने वाले लोग 36 घंटों तक उपवास रखते हैं।

यह व्रत ज्यादातर स्त्रियां ही रखतीं हैं किन्तु आजकल पुरुष भी इसे अत्यधिक श्रद्धा के साथ मनाते हैं तथा व्रत रखते हैं। यह व्रत परिवार की सुरक्षा तथा खुशहाली के लिए रखा जाता है, मान्यता है की छठी माई संतानों की रक्षा करके उनको दीर्घायु प्रदान करती हैं।

छठ पूजा की व्रत विधि :–

यह महान पर्व चार दिवसीय होता है, मुख्यतः बिहार में इसका एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है।

व्रत तथा पूजा की विधि इस प्रकार है :–

१. पहले दिन नहाय–खाय की विधि की जाती है, इस दिन सूर्योदय से पूर्व पवित्र नदियों में स्नान किया जाता है। स्नान के बाद भोजन किया जाता है और भोजन में कद्दू की सब्जी तथा दाल चावल ही खाया जाता है।

२. कार्तिक शुक्ल की पंचमी के दिन लोहंडा और खरना की रस्म होती है। इस दिन दिनभर निराहार रहा जाता है, और रात्रि में खिरनी खाई जाती है। खिरनी प्रसाद के रूप में आस पड़ोस वालों को बांटी जाती है, तथा उन्हें अपने घर आमंत्रित किया जाता है।

३. कार्तिक शुक्ल की षष्ठी को संध्या अर्घ दिए जाने की परंपरा है। यह इस व्रत पर्व का तीसरा दिन है, इस दिन संध्या में ढलते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इस क्रिया के लिए किसी नदी अथवा तालाब के किनारे जाकर टोकरी अथवा सूपा में फल, सब्जी और अन्य पूजा का सामान रखा जाता है एवं एक समूह में एकत्रित होकर भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इस दिन दान का भी अत्यंत महत्व है, इस दिन घर में प्रसाद बनाया जाता है, जिसमे लड्डुओं का विशेष महत्व होता है।

४. छठी पर्व के चौथे दिन अर्थात अंतिम दिन उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। यह सप्तमी का दिन होता है, इस दिन सफाई का बहुत ध्यान रखा जाता है। पूरा प्रसाद स्वच्छता के साथ बनाया जाता है और फिर सबके बीच बांटा जाता है।

यह चार दिन का व्रत सबसे कठिन व्रत माना जाता है जो की दृढ निश्चय और गहरी आस्था से ही किया जा सकता है।

देव उठनी एकादशी

देवउठनी एकादशी के चार माह पूर्व आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी को भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं और फिर इस समय अर्थात पूरे चार माह बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी को वे अपनी योगनिद्रा से उठते हैं। इसलिए यह एकादशी अत्यंत शुभ मानी जाती है और इस के बाद वो सभी मंगल कार्य भी शुरू हो जाते हैं जो देवशयनी एकादशी के बाद बंद थे। यह एकादशी भी बाकि एकादशियों की भांति पापमुक्त करने वाली है। इसलिए भक्त एकादशी का व्रत करके अपने सभी पापों से मुक्त होते चले जाते हैं और बैकुंठ में अपना स्थान सुनिश्चित करते हैं। इस एकादशी से मिलने वाला पुण्य राजसूय यज्ञ से मिलने वाले पुण्य से भी अधिक बताया जाता है।

इस दिन से चार माह पूर्व जब विष्णु भगवान क्षीरसागर में सो जाते हैं तब शादी, मुंडन, नामकरण, गृहप्रवेश आदि जैसे शुभ कार्य नहीं किये जाते और ये सभी मंगल कार्य देवउठनी एकादशी के साथ ही शुरू हो जाते हैं।

क्या हैं देवउठनी एकादशी व्रत के नियम? :–

देवउठनी एकादशी का व्रत अत्यंत पावन होता है, क्योकि यह समय श्री हरी विष्णु के जागरण का होता है अतः सभी नकारात्मक शक्तियां प्रभावहीन हो जाती हैं और मनुष्य ऐसे

सकारात्मक वातावरण में व्रत रख कर निर्मल हो जाता है। आइये जानते हैं कि किस प्रकार व्रत रखकर हम भगवान **विष्णु को प्रसन्न कर सकते हैं :–**

1. एकादशी का व्रत सामान्यतः निर्जला ही रखा जाता है, किन्तु यदि निर्जला नहीं रख पाते तो केवल जलीय तत्वों पर उपवास रखना चाहिए।
2. एकादशी के दिन चावल खाना वर्जित होता है, इसलिए चाहे आपका व्रत हो या न हो चावल को इस दिन न खाएं।
3. वृद्ध, बच्चे तथा रोगी मनुष्य इस व्रत को केवल एक ही बेला तक रखें और अन्य समर्थ व्रती द्वादशी के दिन ही व्रत खोलें।
4. एकादशी के व्रत के नियमों का पालन दशमी के दिन से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए, अर्थात दशमी के दिन से ही सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए और अन्य गरिष्ठ भोजनों का त्याग करना चाहिए।
5. इस दिन भगवान विष्णु के पूजन के उपरांत दिन भर **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः"** का जाप करना चाहिए।

भगवान को जगाने के लिए निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करना चाहिए :–

उत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पतये।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम।।
उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव।
गतामेघा वियच्चौव निर्मलं निर्मलादिशः।।
शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव।।

कैसे किया जाता है देवउठनी एकादशी का व्रत? :–

एकादशी की पूजा के लिए गन्ने का अथवा केले के पेड़ का मंडप बनाया जाता है, जिसके बीच में एक चौक की स्थापना की जाती है। चौक पर शुद्ध लाल, सफेद अथवा पीला कपड़ा बिछाकर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित की जाती है। श्री हरी को फल, नारियल, मिठाई तथा गन्ना आदि चढ़ाया जाता है और घी का दीपक जलाया जाता है। भगवान विष्णु के चरण स्पर्श कर के उन्हें जगाया जाता है तथा व्रत कथा भी सुनाई जाती है। इस दिन के बाद से ही सभी मंगल कार्य आरम्भ हो जाते हैं, इसलिए इस दिन दान पुण्य से कार्य आरम्भ करने चाहिए।

तुलसी विवाह

यह एक प्राचीन हिन्दू प्रथा अथवा त्योहार है, जिसे देवउठनी एकादशी के दूसरे दिन मनाया जाता है। इसके अनुसार तुलसी का विवाह श्री हरी विष्णु के साथ किया जाता है, यह प्रथा एक पौराणिक कथा पर आधारित है। कहा जाता है जो लोग तुलसी का विवाह विष्णु जी से कराते हैं उनको वैवाहिक सुख प्राप्त होता है। पौराणिक कथा के अनुसार तुलसी ने भगवान विष्णु को पत्थर बन जाने का श्राप दिया था, फिर भी क्यों विष्णु जी और तुलसी जी का विवाह किया जाता है, आइये जानते हैं इस लेख द्वारा :

तुलसी सावर्णि मुनि की पुत्री थी, वह अत्यंत सुंदर थी। उसकी इच्छा थी की उसका विवाह श्री विष्णु के साथ हो। इस वरदान की प्राप्ति हेतु उसने ब्रह्मा जी की घोर तपस्या की। कई वर्षों की तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न हुए और तुलसी के सामने प्रकट हुए।

श्री नारायण से विवाह की अभिलाषा :–

ब्रह्मदेव ने तुलसी से वरदान मांगने को कहा, तुलसी ने कहा – 'प्रभु मैं चाहती हूँ की श्री हरी मुझे मेरे पति रूप में प्राप्त हो।' ब्रह्मा जी ने कहा –'इस जन्म में तुम अपने पूर्व जन्म का फल भोग रही हो इसलिए इस जन्म में तुम्हे नारायण नहीं मिल सकते किन्तु नारायण के पार्षद, जो इस लोक में अपने पुराने जन्म का फल भोग रहे है और नारायण के ही अंश भी हैं, उनसे तुम्हारा विवाह होगा। इस जन्म में अपने सभी कर्मफलों को भोगकर तुम्हे अगले जन्म में नारायण ही पति स्वरुप मिलेंगे।'

शंखचूड़ से तुलसी का विवाह :–

ब्रह्मा जी का वरदान पा कर तुलसी बहुत प्रसन्न हुई और

वही वन में कुटिया बनाकर रहने लगी। श्री हरी का पार्षद दानव कुल में जन्म लेकर अपने कर्मों का फल भोग रहा था, उसका नाम शंखचूड़ था। चूँकि वह नारायण का पार्षद था और स्वयं उन्हीं का एक अंश भी था इस कारण वह अत्यंत शक्तिशाली था। एक दिन वन में विहार करते हुए उसने तुलसी को देख लिया और देखते ही तुलसी के तेज और सुंदरता पर मोहित हो गया। उसने तुलसी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, शंखचूड़ का पौरुष देख तुलसी भी उस पर मोहित हो गयी थी और उसने विवाह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। दोनों विवाह के पश्चात् सुख पूर्वक रहने लगे, तुलसी अत्यंत पतिव्रता स्त्री थी जिसके फलस्वरूप शंखचूड़ का बल और बढ़ गया और उसका तेज पूरे विश्व में फैल गया। वह धीरे धीरे अपना साम्राज्य बढ़ाने लगा और ऐसे ही उसने एक दिन स्वर्ग को भी जीत लिया। सभी देवताओं को स्वर्ग छोड़ कर भटकना पड़ा।

देवताओं ने की त्रिदेवों से हस्तक्षेप की मांग :–

शंखचूड़ धर्म से ही अपना शासन बढ़ा रहा था, किन्तु देवता राज्य छिन जाने से परेशान हो गए और सभी मिलकर ब्रह्मा जी की शरण में गए और अपनी व्यथा कह सुनाई। ब्रह्मा जी ने सुझाव दिया की विष्णु के पार्षद को पराजित करना सरल नहीं है इसलिए तुम सबको विष्णु जी की शरण में जाना चाहिए। सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में गए। देवताओं की विनती सुन विष्णु जी बोले कि शंखचूड़ मेरा ही अंश है और उसकी पत्नी के सतीत्व के कारण वह इतना बलशाली हो गया है की उसे हराना किसी के वश में नहीं है। यदि उसकी पत्नी का सतीत्व भंग कर दिया जाये तो वह अवश्य मारा जायगा।

आप सब भगवान शंकर से प्रार्थना कीजिये। शंखचूड़ भी भोलेनाथ को पूजता है, उनकी बात अवश्य मान जायगा। सभी देवता शिव जी की शरण में जाकर उनसे शंखचूड़ को समझाने की प्रार्थना करने लगे। शिवजी उनकी बात मानकर शंखचूड़ के पास गए और उससे कहा की वो देवताओं का राज्य लौटा दे, अन्यथा उसे शिव के साथ भी युद्ध करना पड़ेगा।

राज्य लौटाकर युद्ध से बचने का प्रस्ताव :–

शंखचूड़ ने भोलेनाथ से कहा – ''हे महादेव! मैंने अभी तक सभी युद्ध धर्मपूर्वक जीते हैं। यदि देवता भी मेरी शरण में रहना स्वीकार करते हैं तो मैं उन्हें भी अपनी प्रजा की तरह सुखी रखूँगा। किन्तु आपको यह युद्ध करना शोभा नहीं देता। आप क्यों देवता और मेरी लड़ाई में पड़ते हो।'' यह सुनकर शंकर मुस्कुराये , वे बोले शंखचूड़ देवता मेरी शरण में आये हैं तो तुम उन्हें उनका राज्य लौटा दो। नहीं तो मुझ से युद्ध करो।'' शंखचूड़ ने कहा 'वो राज्य मैंने बल द्वारा प्राप्त किया है, यदि कोई मुझ से उसे लेना चाहे तो बल द्वारा ही ले सकता है।'

देवताओं और शंखचूड़ का युद्ध :–

शंखचूड़ और भगवान शंकर के युद्ध की बात सुनकर तुलसी चिंतित हो गयी। शंखचूड़ ने अपनी प्रिय पत्नी को समझाया और कहा जब तक तुम और तुम्हारा विश्वास मेरे साथ है मुझे कुछ नहीं हो सकता। तुम्हारा सतीत्व मेरी रक्षा करेगा और मुझे विश्वास है कि मैं शिव सहित देवताओं को फिर से परास्त कर दूंगा।

कुछ समय बाद युद्ध आरम्भ हो गया, देवताओं ने शिव के नेतृत्व में शंखचूड़ की सेना पर आक्रमण कर दिया। शंखचूड़ ने देवताओं को अपने मायावी हमलों से घायल कर दिया। भयंकर युद्ध करते हुए दिनों दिन बीतने लगे किन्तु शंखचूड़ का पराजित होना संभव नहीं हो रहा था। स्वयं शिव शंकर उसे मार पाने में सक्षम नहीं हो रहे थे। युद्ध को बढ़ता देख देवता एक बार फिर विष्णु जी की शरण में गए और उनसे मदद करने की प्रार्थना की।

विष्णु ने किया तुलसी से छल :–

विष्णु जी जानते थे कि तुलसी के प्रभाव से ही शखचूड इतना बलशाली है। इसलिए वे शंखचूड़ का रूप धर कर तुलसी के समक्ष चले गए। तुलसी उस समय अपने पति की जीत की कामना के लिए यज्ञ कर रही थी। जैसे ही शंखचूड़ बने विष्णु तुलसी के पास गए, तुलसी अपने पति को सामने देख कर खुश हो गयी। वह नहीं जान सकी की वे उसके पति नहीं। विष्णु बोले, देखो प्रिये तुम्हारे सतीत्व के कारण ही मैं देवताओं से ये युद्ध भी जीत गया। तुलसी ने प्रसन्नतापूर्वक शंखचूड़ बने विष्णु को आलिंगन में ले लिया। किन्तु पर पुरुष के स्पर्श से तुलसी का सतीत्व भंग हो गया और शंखचूड़ भगवान शंकर के त्रिशूल से मारा गया।

नारायण को दिया श्राप :–

शंखचूड़ के मरते ही विष्णु अपने रूप में वापस आ गए। उन्हें देखते ही तुलसी समझ गयी की शंखचूड़ को मारने के लिए विष्णु ने उसका सतीत्व नष्ट किया है। वह क्रोध से भर गयी और विष्णु को श्राप दे दिया – "एक सती स्त्री का सतीत्व भंग करने का अपराध करने वाले पाषाण हृदय देव, आप स्वयं हृदयहीन पत्थर हो जाओ।"

विष्णु ने तुलसी के दिए श्राप को स्वीकारते हुए कहा – "देवी तुम्हारे तथा शंखचूड़ के उद्धार के लिए ये सब मुझे करना पड़ा। अब तुम दोनों ही शाप मुक्त हो। तुम अब ये शरीर त्याग कर एक पवित्र बिरवा रूप धारण करोगी और तुम्हारे श्राप के कारण मैं शालिग्राम पत्थर बनूँगा। तुम मेरे शीश पर विराजोगी और तुम्हारे तुलसी दल से ही मेरी पूजा होगी। इस प्रकार तुम्हारा स्थान मुझसे भी ऊपर होगा। तुम्हारे पति की हड्डियों के चूर्ण से शंख की उत्त्पत्ति होगी तथा उस शंख से देवताओं की तथा मेरी पूजा होगी।"

इस प्रकार तुलसी एक पवित्र पौधे में परिवर्तित हुई और भगवान विष्णु शालिग्राम में प्रतिष्ठित हुए। और तभी से श्री हरी विष्णु की पूजा में तुलसी दल अवश्य शामिल किया जाता है, और देवउठनी एकादशी के में श्री हरी के जागने के बाद उनका विवाह विष्णु जी से कराया जाता है।

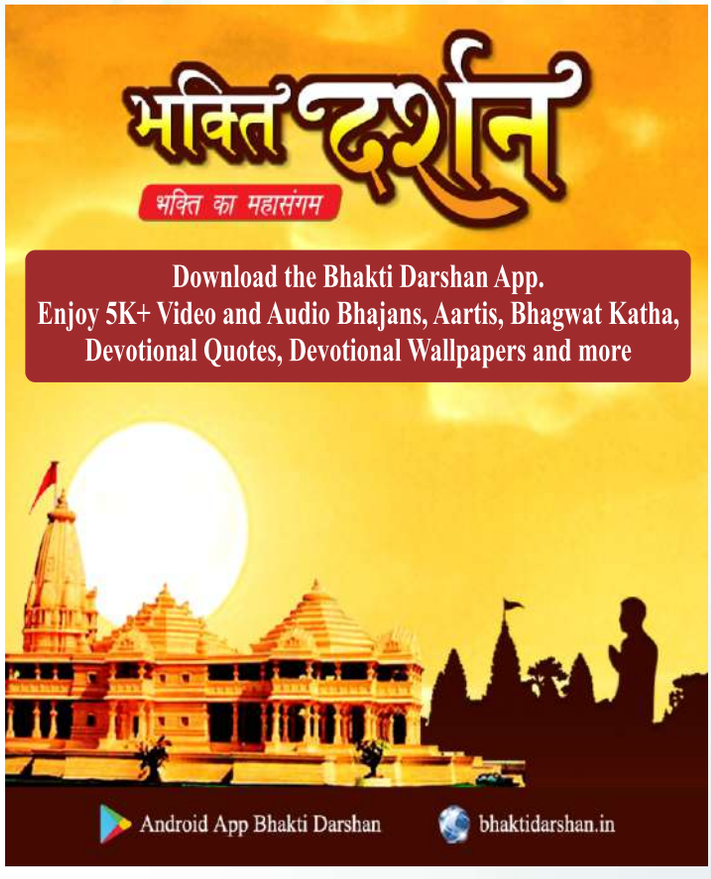

नवम्बर 2018 मासिक राशिफल

मेष

आपकी राशि वालों के लिए यह माह अत्यधिक खर्च और व्यर्थ की भागदौड़ के साबित होगा। फिजूल खर्च से बचें जिससे तनाव कम रहेगा। आपकी परिवार के लोगों से मनमुटाव की स्थिति बन सकती है। स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहने की आवश्यकता है। आपकी निपुणता आपके वरिष्ठों का भी ध्यान आकर्षित कर सकती है। संबंधों में कुछ मामूली विवाद हो सकते हैं। लेकिन यह निश्चित रूप से घातक नहीं है।

मेष के लिए नवंबर निराशा से भरा हो सकता है। तथ्य यह है कि प्रत्येक विशेष स्थिति की योजना बनाई नहीं गई है, इसका यह मतलब नहीं है कि आप अभी भी इसमें से कुछ अच्छा नहीं कर सकते। आप बस शरद ऋतु की निराशा में डूब नहीं सकते हैं, जिनसे आपको समय–समय पर काम लेना हैं। बल्कि आराम करें, और भविष्य के लिए शक्ति इकट्ठा करें।

आप स्मार्ट और सक्षम हैं। यह दिखाने से डरें मत। आपके नियोक्ता इसकी सराहना करेंगे, इसलिए ईर्ष्यालु सह–कर्मचारियों पर ध्यान मत दें।

स्क्वैश या रैकेट के दूसरे खेल का प्रयास करें। यह आपकी ऊर्जा को फिर से ताजा करेगा।

वृष

मजबूत और जिद्दी, लेकिन व्यावहारिक और दृढ़

नवंबर वृषभ को कार्यक्षेत्र में फायदे लाएगा। अत्यधिक विकसित व्यव्हार कौशल के कारण, आप आसानी से व्यावसायिक संपर्क स्थापित करने में सक्षम होंगे। इसलिए, आप अपनी कंपनी को काफी कमाई करवा सकते हैं। आपकी सफलता किसी से अज्ञात नहीं रहेगी। विनम्र रहना महत्वपूर्ण है और उसे आपके सिर पर नहीं पहुँचने दें।

नवंबर में, ग्रहों और सितारों की स्थिति फिर से बदलती है।

जहाँ छोटी चोटों की बात आती है, आपको विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए। उदाहरण के लिए घर के काम या खेल के दौरान। आप खतरनाक परिस्थितियों के बारे में जितने भी सावधान रह सकते हैं, रहे। नौकरी में मनचाहा कार्य एवं प्रमोशन नहीं मिलने से खीझ होगी। प्रयत्नों से भी फल प्राप्त नहीं होगा। निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाई होगी।

अन्ततः आपकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से होगी जिसने आपको बहुत प्रेरित किया है। अपना संयोग लें और रचनात्मक बनें। अपने आप को शिक्षित करें, किसी प्रस्तुति में जाएँ या कोई शैक्षिक फिल्म देखें। अपनी अन्तरात्मा की आवाज को खोजें। अवास्तविक संकल्प मत करें जिन्हें पूरा नहीं किया जा सकता है।

मिथुन

हास्य और रचनात्मकता के साथ मिलनसार और विनम्र चरित्र

नवंबर में, मिथुन परिवार के समर्थन पर भरोसा कर सकते हैं। यदि केवल आप एक ही बोझ नहीं उठा रहे हैं तो किसी भी परेशानी को आसानी से पार किया जा सकता है। अपने चारों ओर के लोगों को आपकी सहायता करने दें। इस अवधि में,चिड़चिड़ापन हो सकता है। हताशा को खेलकर दूर किया जा सकता है

आपके करियर में सफलता के कारणय आप सकारात्मक मनोदशा में हैं। मिथुन अपने निजी जीवन में भी इसे लाने का प्रबंध करते है। इस तथ्य की वजह से एकल लोग आसानी से और सुंदर ढंग से नए लोगों से मिलेंगे। नवंबर में आप मजे करेंगे, जीवन के रोमांच और लाभों का आनंद लेंगेय यह बात जो प्यार में हैं उन लोगों के लिए भी लागू होती है।

आपको आलस्य निश्चित रूप से नहीं करना चाहिए चाहे दूसरे व्यक्ति ऐसा करें। आपके बॉस का ध्यान आपके प्रयासों पर जाएगा।

अपना आहार–नियम बदलें। अधिक सब्जियाँ और कम नमक खाने का प्रयास करें। आप बेहतर अनुभव करेंगे।

कर्क

भावुक लेकिन संवेदनशील चरित्र, मूडी और गंभीर

कर्क के लिए, नवंबर एक सकारात्मक अवधि होगी, तारे विशेष रूप से लंबे समय के संबंधों के पक्ष में होंगे। वे अब पनपने लगेंगे। आपके और आपके साथी के बीच का आपसी विश्वास मजबूत और मजबूत होता जाएगा। शायद अब यह अगला कदम उठाने का समय है। बस अपने भय को दूर करें और जिम्मेदारी ले। आप खेल में भी अच्छा करेंगे।

नवंबर में, अपने पिछले प्रयासों के कारण कर्क अभी भी सफलता और शांति का आनंद ले सकता है। आपके पास अपने लिए अधिक समय होगा, इसलिए इसका अच्छा उपयोग करें। अपने आप को स्वास्थ्य या कुछ अच्छा तोहफा दें। खेल आपको अच्छी स्थिति में रखेगा। इस तरह आप शरद ऋतु की बीमारी से बच सकते हैं जिससे कर्क अक्सर ग्रस्त होते है।

जब चीजें कठिन हो जाती हैं तब यह परिणाम निकलेगा कि आप अपने सहकर्मियों की तुलना में बहुत बेहतर कर रहे हैं।

अपने समीपस्थ लोगों की उपेक्षा नहीं करने के लिए सावधान रहें, अपनी दिनचर्या में उनके लिए कुछ समय निकालें। वे वास्तव में प्रसन्न होंगे।

सिंह

साहसी, आत्मविश्वासी, मुखर और खुले

नवंबर में, आप समृद्धि और तालमेल की उम्मीद कर सकते हैं, जो आपके संबंधों के क्षेत्र में सितारों द्वारा लाए जायेंगे। अब सिंह के लिए अगला चरण उठाने के लिए यह सही समय है। आप उत्कृष्ट परिवारिक रिश्तों की भी अपेक्षा कर सकते हैं। कोई भी मामूली विवाद, उसी समय में हल किया जाएगा।

नवंबर के साथ शरद ऋतु की उदासी आ सकती है। सिंह लगभग समाप्त होते हुए वर्ष की समीक्षा करना शुरू करेंगे और यह विचार करेंगे कि क्या अलग–अलग तरीके से किया जा सकता था। कुंडली के अनुसार, निराशा से बचने का सबसे अच्छा तरीका, उसे स्वीकार नहीं करना है। इतिहास को बदला नहीं जा सकता है, इसलिए वर्तमान के बारे में खुश रहें।

नक्षत्र इस समय आपको सबसे अच्छी शुभकामना देते हैंय इसका अर्थ आपके कैरियर में बेहतर पद भी हो सकता है।

कन्या

चिंताशील, चौकस लेकिन बुद्धिमान और अतिसावधान

कैरियर में, कन्या राशि के लोग को एक बार फिर उन में क्या है ये दिखाने का मौका मिला है। नवंबर द्वारा लायी गई उज्जवल सोच आपको सबसे जटिल कार्यों को सुलझाने में भी मदद करेगी। यह आपके लिए आसान होगा। आपकी ऊर्जा का उपयोग खेल में किया जा सकता है, अपने शरीर का ध्यान रखना अच्छा निवेश है।

नवंबर में कन्या को अपने परिवार के बीच अधिक समय बिताना चाहिए। आप काम की समस्याओं के बारे में भूल जाएँगे

और केवल सद्भाव का आनंद लेंगे। पुराने एहसान लौटाने में संकोच न करें। अन्यथा इस तथ्य के बावजूद कि इसका विपरीत सच हो सकता है, कोई आपको स्वार्थी व्यक्ति समझ सकता है। दयालुता का समर्थन करने वाले शब्दों को प्रदर्शित करने में संकोच न करें।

दिमाग खुला रखें और अपनी राय देने से डरें मत चाहे यह नकारात्मक हो। आपके सहकर्मी समझ जाएँगे।
किसी विदेशी भाषा के अपने ज्ञान पर से धूल झाड़ें। ऐसा लगता है कि यह जल्द ही काम में आएगी।

तुला

न्याय, सहानुभूति, सुसंगतता और अखंडता

नवंबर में, दीर्घकालिक रिश्तें कामयाब होंगे। जिस विश्वास पर आपने पूरे समय निर्माण किया हैं वह अब फल लाएगा। यदि आप अगले कदम के लिए तैयार हैं, तो यह सही समय है। जन्म कुंडली के अनुसार, तुला को अपने दोस्तों के बारे में नहीं भूलना चाहिए। वे आपके सम्बन्ध की कमी को व्यक्तिगत रूप से ले सकते हैं।

तारों के अनुसार नवंबर तुला के लिए एक सकारात्मक माह होगा। आप अपने कैरियर और संबंधों में भी सफलता की आशा कर सकते हैं। अंततः हालात शांत हो जाएंगे और आप एक जोड़े के रूप में साथ बिताए हुए सुसंगतऔर रोमांटिक पलों का आनंद लेंगे। दूसरी तरफ, अकेले तुला को जितना संभव हो उतना सामाजिक रहना चाहिए। आप सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेंगे।

परियोजनाओं की माँग करने के लिए नक्षत्रों के संरक्षण का उपयोग करें। इस समय किसी विचार को लाने का और चमक उठने का सही समय है।

यदि आप इसकी मनोदशा में नहीं हैं, तो भी खेलकूद को एक अवसर दें। यह आपका ध्यान बँटाएगा।

वृश्चिक

सावधान सेनानी, दूरदर्शी और दूसरों के प्रति संवेदनशील

जन्म कुंडली सलाह देती है कि नवंबर में, निश्चित रूप से आपके जीवन साथी पर अपनी हताशा प्रदर्शित करना कोई अच्छा विचार नहीं है। आप केवल तालमेल को बर्बाद करेंगे जिसको आपने हाल ही में बनाया था। काम पर स्थिति शांत हो जाएगी, ताकि आप अपना समय क्रिसमस की योजना बनाने में बिता सकें। इस अवधि में, सितारों ने स्कोर्पियो को अच्छे स्वास्थ्य का भी वादा किया है।

नवंबर में, वृश्चिक को अपने परिवार या निकटतम मित्रों की पृष्ठभूमि और जड़ों की खोज करनी चाहिए। केवल वे ही मुश्किल समय में आपकी सहायता कर सकते हैं। धीरे–धीरे आप पिछली घटनाओं के बारे में भूलना शुरू कर देंगे और सावधानी से वापस सामान्य हो जाएंगे। बस काम पर कुछ भी नहीं भूलें, बाद में यह उल्टी प्रतिक्रिया दे सकता है।

तनावरहित हों, योग करें। यदि आप इसमें नए हैं तो किसी को अपने साथ ले जाएँ। अनुभव और अधिक गहन होगा।

यदि आप सोचते हैं कि आपको कोई अच्छा जोड़ीदार नहीं मिलेगा, तो घर पर रहें। कोई भी गुस्सा नहीं होगा।

धनु

उद्देश्यपूर्ण, ऊर्जावान और इच्छा और प्रयास से भरा

नवंबर में धनु मुख्य रूप से अपने जीवन के बौद्धिक क्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा की उम्मीद कर सकते हैं। इस तर्कसंगत अवधि में, आप अपनी प्राथमिकताओं को सुलझाने में सक्षम होंगे और इससे भी अधिक जटिल समस्याओं से डरेंगे नहीं। आपके परिवार की स्थिति सामंजस्यपूर्ण होगी। आप भरोसा कर सकते हैं कि जब भी आप को जरूरत हो, तो आपके सबसे नजदीकी लोग आपको सहायता का हाथ देंगे।

धनु को नवंबर में अपने करियर पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा और जो भी बचाया जा सकता है उसे बचाना होगा। कुछ भी आपको परेशान न करें उसका ध्यान रखें, यहां तक कि आगामी क्रिसमस का माहौल भी नहीं। आपको कुछ फ्री–टाइम की गतिविधियों को छोड़ना होगा, लेकिन विश्वास रखें, यह फलदायी होगा।

अपने ध्यान को उधर मोड़ें जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है और निरर्थक बातों से विचलित मत हों।
यह बुरी आदतों को छोड़ने के लिए उचित समय है। नक्षत्र इन दिनों वास्तव में आपके पक्ष में हैं।

मकर

रूढ़िवादी राशियाँ व्यावहारिक, सतर्क, दृढ़ और गंभीर हैं

नवंबर में आपके आगे सामंजस्यपूर्ण अवधि है, जिसका उपयोग कैरियर में किया जा सकता है। अपने सहकर्मी या मालिक से बात करने से मत डरें, क्योंकि इस अवधि में आपके साथ दया और समझ से व्यवहार किया जाएगा। मकर के लिए,

इसका अर्थ वेतन वृद्धि , या बोनस का कुछ अन्य रूप हो सकता है।

इस तथ्य के बावजूद भी के सितारों ने मकर राशि का रिश्तों का क्षेत्र सबसे अच्छा रखा है, वर्ष की अंतिम तिमाही के दौरान, नवंबर में परिवार में खराबी हो सकती है। छोटी गलतफहमी के कारण आप झगड़े कर सकते हैं। सौभाग्य से आपको इस बात का एहसास होगा कि यह ओछापन की वजह से आपका सामंजस्य बर्बाद नहीं होना चाहिए, इसलिए विवाद जल्दी ही शांत किया जाएगा।

आपको इसके बजाय अपने बॉस से बचना चाहिए और सब काम तत्काल पूरा करना चाहिए, ताकि आपको और अधिक परेशानी न हो।

आपको अपने मित्र की सलाह माननी चाहिए और उस जगह की यात्रा करनी चाहिए जिसकी सिफारिश की गई थी।
संतुलित जीवनशैली वह चीज है जिसकी आपको अभी वास्तव में आवश्यकता है।

कुंभ

प्रयोग की भावना के साथ भावपूर्णऔर रोमांटिक

नवंबर में, बुध के प्रभाव के कारण, कुंभ राशि विशाल मात्रा में मानसिक शक्ति की उम्मीद कर सकती है। आप बहुत सारी जानकारी लेते हैं और प्रक्रिया करते हैं लेकिन आप वास्तव में कैरियर में इस तथ्य का उपयोग नहीं करेंगे। जन्मकुंडली आपको अपने कैरियर को आगे बढ़ाने के व्यर्थ प्रयासों की बजाय यह महीना शिक्षा को समर्पित करने की सिफारिश की है। एथलीट्स अच्छा प्रदर्शन करेंगे, विशेष रूप से वे जो पेशेवर हैं।

नवंबर में, स्थिति फिर से शांत हो जाएगी। सितारें एक स्थिर और सकारात्मक स्थिति में हैं। रिश्तों में समस्याएँ शांत हो चुकी हैं। कुंभ राशि अपना खाली समय अपने निकटतम लोगों के साथ या कोई खेल में बिता सकते हैं। साथ ही, अपने सभी संबंधों को मजबूत करने के लिए इस अवधि का अच्छा उपयोग करें।

आज का दिन पुनर्निर्माण के लिए उपयुक्त है। ठीक तरह से सफाई करें या रंग–रोगन करें, पुराना फर्नीचर फेंक दें और नया फर्नीचर ढूँढें।

अब संकल्प करने का सही समय है। नक्षत्र स्थिर हैं इसलिए आपको उन संकल्पों को पूरा करना सरल होगा।

मीन

शालीन और संवेदनशील राशि, उनके पास मजबूत आंतरिक अनुभूति और प्रेरणा है

इस महीने, मीन काम पर उनके प्रयास का फल मिलने की उम्मीद कर सकते हैं। जन्मकुंडली वे लोग जिन्होंने अभी–अभी प्यार करना शुरू किया हैं उनको कल्पना की दुनिया में नहीं चले जाने का सुझाव देती है। यह आपके ''परिपूर्ण'' बबल से बाहर निकलने का समय है और दुनिया को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखने का भी।

जहाँ रिश्ते की बात आती है, नवंबर में आप सकारात्मक ऊर्जा की अपेक्षा कर सकते हैं। आप पुराने दुश्मनों के साथ सुलह कर लेंगे और अपनी सारी समस्याओं को भूल जाएंगे। आपके जीवन में एक नई उपस्थिति आपको समृद्ध करेगी। मीन परिपक्व होकर अपनी महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं का और जीवन अपेक्षाओं का बन्दोबस्त कर लेंगे।

आपको आलस्य निश्चित रूप से नहीं करना चाहिए चाहे दूसरे व्यक्ति ऐसा करें। आपके बॉस का ध्यान आपके प्रयासों पर जाएगा।

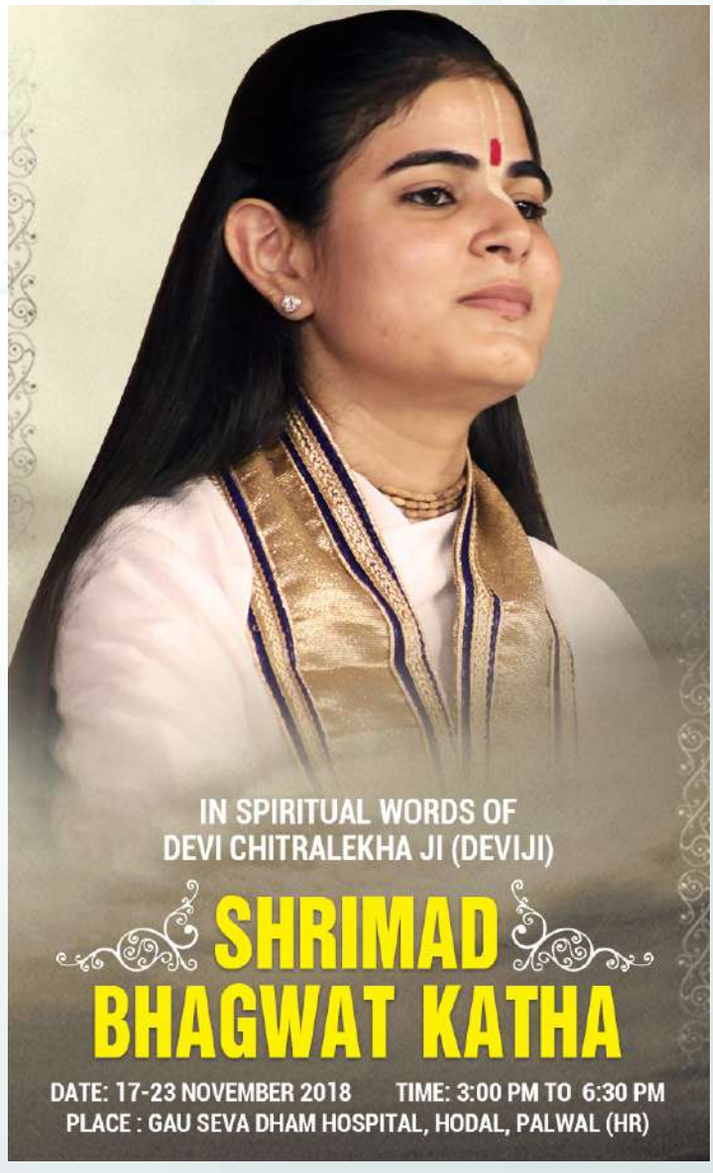

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

॥ भक्ति दर्शन ॥

भक्ति का महासंगम

धनतेरस

भैया दूज

छठ पूजा

DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.
ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA, DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.